AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

# "समग्र विकास का पोषणः स्वामी विवेकानन्द की दार्शनिक शिक्षाओं और शैक्षिक आदर्शों की खोज"

**Sangeeta kumari**
Research Scholar
**Dr. V. K. Sharma,**
Professor
Glocal School of Education

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THISPAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNALIS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHERWILL NOTBELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OFSUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MYCONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FORTHE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITHNO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, IHAVE RESUBMITTED THISPAPER FORTHE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDENBYME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLYRESPONSIBLE. (COMPLETEDECLARATIONOFTHE AUTHORATTHE LASTPAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

## सार

वेदांत दर्शन के मुख्य दार्शनिक, स्वामी विवेकानंद ने पहली बार विश्व के बुद्धिजीवियों को भारतीय सांस्कृतिक मान्यता और राष्ट्रीय गर्व का परिचय कराया। एक भारतीय वेदांती होने के नाते, उन्होंने लोगों से अलगाव को समझने और मूल्यांकन करने की प्रेरणा दी और साथ ही अन्य धार्मिकता और धार्मिक सहिष्णुता की भावनाओं को बढ़ावा दिया। वर्तमान अनुसंधान में विवेकानंद के दार्शनिक शिक्षाओं को और उनके शिक्षा के प्रति उनके विचारों और विश्वासों को मध्य में लाने का प्रयास किया गया है। इसमें उनके मौलिक दार्शनिक सिद्धांत, प्रमाणशास्त्र, अस्तित्वशास्त्र, और मूल्यशास्त्र पर दृष्टिकोण, उनके शिक्षा दर्शन, शिक्षा की परिभाषा, उसके उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण रणनीतियाँ, शैक्षिक माध्य, शिक्षानिकटिकाएँ, शिक्षक–छात्र संबंध, पूर्वोत्तर और पश्चिम का संयोजन, और धर्म और विज्ञान का सामंजस्य सम्यक संशेषण शामिल है। यह पुनरावलोकनात्मक अनुसंधान वर्णनात्मक–संचयात्मक विश्लेषण तकनीक का प्रयोग करता है। अनंततत्त्व और सत्य के अनुसार, स्वामी विवेकानंद के अनुसार, हर मानव आत्मा भगवान का एक हिस्सा है। मानव शरीर परिणामित होता है, लेकिन आत्मा अंतिम, शाश्वत, और शाश्वत होती है। व्यक्तिगत आत्मा को सुप्राप्ति की प्राप्ति के माध्यम से सर्वोच्च आत्मा, ब्रह्म, से जोड़ा जाता है, जबकि उसका भौतिक शरीर मृत्यु के बाद विघटित हो जाता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा समाज के अविरल विकास का एक प्रमुख घटक है। उनके अनुसार, प्रतिबद्धता प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है, और प्रयासों को लोगों में इन गुणों को बाहर निकालने की कोशिश करनी चाहिए। वह वर्तमान शिक्षा मॉडल के कट्टर विरोधी थे, जिसने छात्रों को उनकी सहज क्षमताओं के विकास में मदद करने की कोशिश नहीं की और केवल सामग्री एकत्र करने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

असली शिक्षा के बारे में बात की, वह शिक्षा जो चरित्र को विकसित करती है, मानसिक संघटन को बढ़ावा देती है, बुद्धि को समझाती है, और किसी को उनकी खुद की पैरों पर खड़े होने की तैयारी करती है। एक संतुलित वेदांत–आध्यात्मिक शिक्षा और सामग्री शिक्षा के माध्यम से, उन्होंने बच्चों के आध्यात्मिक और सामग्रीक विकास पर ध्यान केंद्रित किया। उनके शिक्षा दर्शन के कुछ मुख्य लक्ष्यों में स्व–शिक्षा, आर्थिक संपत्ति के साथ आध्यात्मिक उत्थान, चरित्र विकास, जीवन–निर्माण, और राष्ट्र–निर्माण शामिल हैं। उन्होंने जातिवाद को समाप्त करने की अपील की और महिलाओं और अशक्तों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने की सलाह दी।

**कीवर्डः संवृद्धि की देखभाल, दार्शनिक शिक्षाएँ, शिक्षा के आदर्श,**

## प्रस्तावना

''दुनिया को बदलने का सबसे प्रभावी उपाय शिक्षा है।'' यह तर्क इसलिए है क्योंकि यह जाति विषमता, जाति व्यवस्था, और पूर्वाग्रह सहित कई सामाजिक दुर्बलियों का सामना करने में काम करती है। यह मानव जाति की समाज–आर्थिक और बौद्धिक स्थितियों को सुधारने में भी सहायक है और समावेशी, सतत विकास प्राप्त करने में मदद करता है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2005) द्वारा ज्ञान क्षेत्र पर दिया गया महत्व देश को वैश्विक स्तर पर उन्नति बनाने में मदद करता है। कोठारी आयोग (1964–66) ने सत्यापित किया कि ''भारत का भविष्य उसकी कक्षा कक्षा में रूपित हो रहा है'', शिक्षा और इसके संबंधित घटकों को महत्वपूर्ण मानते हुए। जनसांख्यिक लाभ, सबसे आर्थिक उत्पादक समूह, और राष्ट्र के भविष्य के निर्माणकारी श्रमिक छात्र हैं। दुर्भाग्यवश, ऐसा लगता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने ऐसे व्यक्तियों को उत्पन्न करने में समर्थ नहीं हो सका है जो पूरी तरह से विकसित मानव जीवन होते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली नौकरी–मुखित हो गई है और केवल आर्थिक योग्यता के कौशल प्रशिक्षण पर ही ध्यान केंद्रित करती है, व्यक्ति की शारीरिक, नैतिक, आध्यात्मिक, और सामाजिक विकास के अन्य पहलुओं को अनदेखा करती है। इस परिणामस्वरूप, लोग अक्सर अस्थिरता और असंतुलन का प्रदर्शन करते हैं, जिससे उनकी पर्यावरण में अनुकूलन की क्षमता या जीवन की रक्षा की क्षमता हानि होती है। इस कारण से, कई स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा आयोगों ने पाठ्यक्रम के पुनर्रचना और शिक्षान–सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से एक बच्चे की विशेष व्यक्तित्व के पूरे विकास की प्राप्ति के लिए पुनर्गठन की प्रेरणा दी। इस संदर्भ में, वर्तमान शोध का उद्देश्य था कि विवेकानंद के दार्शनिक उपदेशों, उनके शिक्षा पर दृष्टिकोण, और उनके वर्तमान शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने में उनका उपयोग किया जा सकता है। इसमें विशेष रूप से विवेकानंद के मौलिक दार्शनिक विचारों, प्रमाणतत्त्व, अस्तित्वशास्त्र, और मूल्यवाद पर उनके दृष्टिकोण, और शिक्षा दर्शन, शिक्षा की परिभाषा, इसके उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण रणनीतियाँ, शिक्षण के माध्यम, विषय, शिक्षक–छात्र संबंध, पूर्व–पश्चिम का संयोजन, और धर्म और विज्ञान का समाधान

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

तक केंद्रित है। वेदांत और उपनिषद् स्वामी विवेकानंद की शिक्षा दर्शन की नींव थी। उसके शिक्षा दर्शन में अव्यवसायिकता के तत्व भी शामिल थे, साथ ही विद्यमानवाद, आदर्शवाद, प्रगतिवाद, और प्राकृतिवाद के तत्व भी शामिल थे। उनके दार्शनिक उपदेशों का भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मूलभूत सिद्धांतों पर प्रभाव हो सकता है। स्वामी विवेकानंद, जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन को निरंतर बनाए रहने की सलाह दी, उन्होंने सोचा कि शिक्षा समाज के वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बेहतर बनाने का सबसे बड़ा तरीका है। उन्होंने दुनियादार और नैतिक शिक्षा पर मजबूरी दी। विवेकानंद के शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य एक नई, वर्गरहित समाज की स्थापना करना था, जिसमें सभी पृष्ठभूमियों और प्रवृत्तियों के व्यक्ति शामिल होते, जहां हर कोई प्रतिकृति और प्राप्ति की प्रक्रिया के माध्यम से शांति में रहता। ''शिक्षा सम्पूर्णता की प्रकटि हैय पहले ही मनुष्य में,'' उन्होंने कहा। उन्होंने ऐसी शिक्षा की सराहना की जो मनुष्यों को बनाती है, चरित्र विकास करती है, और प्रगतिशील, नैतिक शिक्षा प्रदान करती है। उन्होंने वर्तमान शिक्षा मॉडल के खिलाफ आपत्ति दी, जिसमें बच्चों को श्रेय प्राप्त करने के लिए तथ्यों को याद करने के लिए मजबूर किया जाता है। यह दृष्टिकोण बच्चों को उनकी व्यक्तिगतता की पूर्ण संभावना को समझने में बहुत कम मदद करता है या उनके व्यक्तिगत विकास को समग्रतः बढ़ावा देने में सहायक नहीं होता। उनके अनुसार, शिक्षा केवल उस प्रकार की प्रशिक्षण है जो वास्तविकता में किसी को उसके दो पैरों पर खड़ा होने की प्रियस्तरी से तैयार करती है, उनकी मानसिक दृढ़ता को मजबूत करती है, और मजबूत चरित्र गुणों का निर्माण करती है। उन्होंने ''शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जन संख्या की सामान्य भीड़ की मदद न करके उन्हें जीवन की लड़ाई की तैयारी के लिए असहाय करे, जो चरित्र की शक्ति को न निकाले, दानशीलता की आत्मा को न लाए, और शेर की बहादुरी को न दिखाए।'' शिक्षा को स्वयं खड़े होने की क्षमता के लिए जरूरी सभी शक्तियों के विकास का समर्थन करना चाहिए, बस ज्ञान की एकत्रण या तथ्यों का संग्रह नहीं, जो छात्रों के मस्तिष्क में प्रवृत्ति कर दिए जाते हैं और उन्हें धीरे–धीरे मशीनों में परिवर्तित करते हैं। शिक्षा संस्थानों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा केवल एक शैक्षिक वातावरण का समर्थन करती है और प्रतिस्पर्धी दुनिया के लिए छात्रों की तैयारी करने की पूरी जिंदगी की प्रदान नहीं करती। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ विवेकानंद की वेदांतिक शिक्षा दर्शन की अवधारणा का उपयोग करके हल किए जा सकते हैं, जो केवल व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व गुणों का विकास ही नहीं करती, बल्कि मनबनाने, चरित्र निर्माण करने, और जीवन निर्माण की नैतिक शिक्षा में भी सहायक होती है।

## अध्ययन का उद्देश्य

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

वर्तमान शोध का प्रयास किया गया है ताकि विवेकानंद के दार्शनिक उपदेशों को और उनके शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और विचारों को मध्य में लिया जा सके। यह उनके मौलिक दार्शनिक सिद्धांतों, प्रमाणतत्त्व, अस्तित्वशास्त्र, और मूल्यवाद पर दृष्टिकोण, और शिक्षा दर्शन, शिक्षा की परिभाषा, इसके उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण रणनीतियाँ, शिक्षण के माध्यम, विषय, शिक्षक–छात्र संबंध, पूर्व–पश्चिम का संयोजन, और धर्म और विज्ञान का समाधान सहित है। इस परिणामस्वरूप, वर्तमान शोध का प्रयास किया गया है कि कुछ उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाए जो निम्नलिखित उपसमूहों पर प्रणालिक जांच करता है, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- विवेकानंद के दार्शनिक उपदेशों के मौलिक विचारों का अनुसंधान करना।
- प्रमाणतत्त्व, अस्तित्वशास्त्र, और मूल्यवाद की दृष्टि में स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचारों का मूल्यांकन करना।
- विवेकानंद द्वारा रखी गई मौलिक शिक्षा दर्शनों की जांच करना।
- शिक्षा के प्रति स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण और विचारों की जांच करना।

## कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन प्रकृति में गुणात्मक है और विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है ताकि लेखों, शोध पत्रिकाओं और पुस्तकों के रूप में संबंधित साहित्य का विश्लेषण और निर्माण किया जा सके।

## अध्ययन की सीमा

वर्तमान शोध का मुख्य ध्यान स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक उपदेशों पर और उनके विचारों के शिक्षा पर प्रायोगिकता पर है।

## भारतीय दर्शन में स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने विशेष रूप से भारतीय दर्शन के आस्थिक (पारंपरिक) और वेदांतिक विद्यालयों के पुनर्जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने एक दर्शनिक विद्यालय विकसित किया जिसे आद्वैत वेदांत के रूप में जाना जाता है। विवेकानंद ने भारतीय दर्शन, खासकर वेदांत और भगवद गीता के अध्ययन में, समकालीन

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

भारतीय शिक्षा और राष्ट्रनिर्माण के लिए मूलभूत नींव रखने का समाधान प्रदान किया। भारतीय दर्शन के मुख्यतः दो श्रेणियाँ होती हैंः आस्थिक और नास्तिक। आस्थिक, या पारंपरिक, वे विद्यालयों की समूह होती हैं जो वेदों की प्राधिकृता और उच्चता को स्वीकार करते हैंय इसमें छह विभिन्न दर्शनिक विद्यालय होते हैंः वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, और वैशेषिक। नास्तिक, या अपारंपरिक, वे विद्यालय होते हैं जो वेदों की प्राधिकरण और उच्चता को नकारते हैंय इसमें तीन दार्शनिक परंपराएँ होती हैंः चार्वाक, बौद्ध, और जैन।

## स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक उपदेश

स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन का अभिव्यक्ति मिलता है उनके प्रतिस्थानित शिक्षाओं में, जैसे कि आदर्शवाद, प्राकृतिकवाद, प्रैग्मैटिज्म, और पश्चिमी मानववाद के विद्यालयों के साथ–साथ वैदांतिक दर्शन, योग, और भगवद गीता के विद्यालयों में। वे वेदांतिक दर्शन के पक्षपाती अनुयायी थे और आत्मा की पूर्णता और एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने अनादि और अनंत रचना को प्रेरित किया। आत्मा कभी नहीं बिना जाती हैय यह केवल भौतिक शरीर से अलग होकर परमात्मान से फिर मिलती है, जो एक, अविकारी ब्रह्मन है। उन्होंने यह दावा किया कि जीवन शक्ति और विस्तार से सबसे अच्छे तरीके से काम करता है, जबकि मृत्यु शक्तिहीनता, स्थिति और संकुचन से सबसे अच्छे तरीके से काम करती है। सर्वोच्च दिव्य शक्ति, ब्रह्मन, मानव के दिव्य प्रकटीकरण के द्वारा प्रतिष्ठित की जाती है। हमारे ब्रह्मांड के तीन घटक आत्मा, ईश्वर, और पदार्थ हैं, और वे सभी प्राकृतिक रूप से असीम और शाश्वत हैं। मानव मानसिक, भौतिक और आचरणीय रूप से स्वयं को शिक्षित करते हैं। प्रत्येक आत्मा परमेश्वर की दिव्य प्रतिनिधिता है और वे सभी एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। वही व्यक्ति थे जिन्होंने विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच विकास के लिए संतुलन बनाने की कोशिश की। उन्होंने विज्ञान और धर्म को कैसे एक साथ मौजूद रह सकते हैं, इसे संतुलित रूप से स्थापित किया। उनके अनुसार, धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नहीं होते हैं और यह एक–दूसरे के पूरक होते हैं। उन्होंने अपनी व्याख्यानों में समकालीन पश्चिमी दर्शन और प्राचीन भारतीय दर्शन के बीच एक समान्य संघटन की आवश्यकता को भी बल दिया। उन्होंने पश्चिमी सामग्रीवाद को आध्यात्मिकता के साथ मिलाया। हालांकि वे हिन्दू संन्यासी थे, उनका धार्मिक उद्देश्य विश्वव्यापी धार्मिक सहिष्णुता और आदर्श संबंध स्थापित करना था ताकि विभिन्न संस्कृतियों को स्पर्श कर सकें। स्वामी विवेकानंद ने समाज की अबाधित परिस्थितियों को तथा इसके पूर्विक सांस्कृतिक धरोहर को भी एक समन्वयित दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता को महत्व दिया। वे भारतीय धर्म को एक छाता के नीचे लाने के लिए काम किये, पश्चिम के सांस्कृतिक दूत के रूप में कार्य किये, और हिन्दू धर्म को विश्व के प्रमुख धर्म के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

शिक्षा के प्रति उपदेश शामिल थे और दुनिया की जटिल समस्याओं का समाधान। स्वामी विवेकानंद के उपदेश ने एक सार्वभौमिक धर्म के विकास की प्रोत्साहन की, जो सभी विश्व धर्मों का सम्मान और प्रशंसा करता है। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता की प्रोत्साहन दी और लोगों से सभी विश्व धर्मों के सकारात्मक पहलुओं का प्रेम करने और अपने आप में समारोह करने की प्रोत्साहन दी। उन्होंने लोगों से कहा कि वे उद्देश्य की बजाय अंतरराष्ट्रीय धर्म और उसकी जागरूकता के सिद्धांतों का पालन करें और उस धर्म की संकीर्ण कुआंज की बजाय। उनके दार्शनिक उपदेश का एक महत्वपूर्ण घटक भी उनके दृढ़ नैतिक, नैतिक और आध्यात्मिक गुणों में महत्वपूर्ण क्रिया था।

## ज्ञानमीमांसा, ओन्टोलॉजी और एक्सियोलॉजी के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द की दार्शनिक शिक्षाएँ

- **ज्ञानमीमांसा पर विवेकानन्द के विचार**

  स्वामी विवेकानंद की वेदांतिक दर्शनिक प्रवृत्ति, जिस पर वह आधारित थे, ने ज्ञान को दो विभिन्न प्रकार के रूप में माना, परा विद्या और अपरा विद्या। परा विद्या के रूप में आता है, जिससे व्यक्ति की आत्मा, आत्मा, आध्यात्मिकता और ईश्वर संबंधित होती है, वेदांग, उपनिषद, पुराण, तर्क और नैतिकता के शिक्षाओं के माध्यम से सीखा जाता है, बीच दुनियावी प्राकृतिक या बाहरी प्राकृति की दुनिया से संबंधित होता है और ज्योतिष, भौतिकी, गणित, जीवविज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र और आयुर्वेद के अध्ययन के माध्यम से सीखा जाता है। स्वामी विवेकानंद के ज्ञान की उपेक्षा करते हुए कह दिया कि हर कोई ज्ञान के साथ पैदा होता है। सभी जानकारी का एकमात्र और सर्वोत्तम स्रोत मानव बुद्धि है। सभी ज्ञान बाहर से आने की बजाय अंदर में है और प्रकट होता है। विचार और ध्यान के तरीकों का उपयोग करके, व्यक्ति दुनिया का विचार कर सकता है एक सोचने और उपयोगी तरीके से। उन्होंने यह माना कि मन केवल अपने पर ध्यान कर सकता है ताकि मौजूदा चीजें सीख सके, नई चीजें खोज सके या विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास कर सके, पुस्तकों, संसाधनशील लोगों और अन्य चीजों की सहायता से। क्योंकि मन सभी सृजन और खोज की उत्पत्ति की जड़ है, इसलिए इसे खोलना और छोड़ना आवश्यक है ताकि चीजें मिल सकें। मानव को सब कुछ छिपे हुए का बहुत बड़ा ज्ञान है। लोगों को बस इस पर्दे को हटाने की आवश्यकता है, सेक्युलर और नैतिक शिक्षा, आत्म–शिक्षा और आत्म–साक्षात्कार के माध्यम से।

- **विवेकानंद का अस्तित्वशास्त्रीय दृष्टिकोण –**

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

अस्तित्वशास्त्र का अध्ययन हमारे चारों ओर के वस्तुओं के मौजूद और अमौजूद वास्तविकता का विश्लेषणात्मक वर्णन में होता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ईश्वर अंतिम तथ्य और सत्य है, और सभी लोगों की आत्माएँ उसी की हैं। भगवान, जिन्हें ब्रह्मन भी कहा जाता है, ने जगत को उस रूप में बनाया है जो मानव निवास के लिए आदर्श है। हमारे चारों ओर कुछ भी बना रहता है और निरंतर परिवर्तन का प्रवृत्त होता है। हमारे दुनियाँ में कुछ भी शाश्वत नहीं है। मनुष्य ईश्वर की कई मानव रूपों में दिव्य प्रतिष्ठा है, जो समान रूप से क्षयशील होते हैं। मानव आत्माएँ हैं, हालांकि अमर, शाश्वत और शाश्वत हैं। जब कोई मानव शरीर मर जाता है, तो उसकी आत्मा उससे अलग हो जाती है और समाधि और अच्छे कार्यों के माध्यम से मोक्ष को प्राप्त करने के बाद ही परमात्मा के साथ फिर मिलती है।

❖ **विवेकानंद का मूल्यात्मक दृष्टिकोण**

स्वामी विवेकानंद एक बहुकुशल व्यक्ति थे जिनकी उज्ज्वल नैतिक चरित्र था। उनका कार्य नैतिकता को ताजगी से और महत्वपूर्ण दिशा देना था। उन्होंने नए नैतिक और नैतिक मानक बनाए। उनका नैतिक दर्शन और सिद्धांत भगवान की एकता और सहज शुद्धता पर आधारित थे। उस समय के बहुत से नैतिकता और नैतिक सिद्धांतों की धारणाएँ डर के सिद्धांत पर आधारित थीं, जैसे कि कोहलबर्ग का अच्छे लड़के और सुखी लड़की का सिद्धांत, भगवान की प्रतिशोध का डर, सामाजिक स्वीकृति और अस्वीकृति का डर, और दूसरों से अस्वीकरण या नकारात्मकता का डर। लेकिन पहली बार, उन्होंने अच्छे व्यवहार की आवश्यकता के लिए समर्थन दिया। मानव स्वाभाविक रूप से अच्छे और शुद्ध होते हैं, इसलिए हमेशा नैतिक और शुद्ध आत्मा रहने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन दोनों के प्रति पूरी तरह से नैतिक और संतुलित दृष्टिकोण की बढ़ती महत्वपूर्णता को दिलाई। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के विकास और प्रगति की तरफ तथा समाज की विकास और समृद्धि की ओर समूचे योगदान की आवश्यकता को समान महत्व दिया, जिसमें व्यक्ति एक महत्वपूर्ण घटक होता है। उन्हाने माना कि प्रत्येक व्यक्ति समय के साथ न्यायसंगत समाज के विकास में महत्वपूर्ण होता है। व्यक्तियों को उनके संस्कृति से उनकी विशिष्टता और रचनात्मकता के विकास में सहायता और प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए, यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे उनके समाज को वापस दें जिनका वे हिस्सा है। साथ ही, क्योंकि हर मानव भी परमात्मन का एक घटक होता है और वे समान दिव्य स्वरूप का हिस्सा होते हैं, उन्होंने दूसरों के प्रति उदार दृष्टिकोण दिलाया। मानवता और

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

प्रेम की भावनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए स्वामी विवेकानंद ने अपने आध्यात्मिक शिक्षक रामकृष्ण के मूलवाक्य ''जीबे प्रेम कोरे जेइ जोन, सेइ जोन सेबिछे ईश्वर'' पर जोर दिया।

## विवेकानंद का शिक्षा का सिद्धांत

वेदांतिक दर्शन, योग और भगवद गीता स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक प्रणाली के आधार थे। उन्होंने अपने शिक्षात्मक दर्शन की भी कुछ विशेष पश्चिमी दर्शनिक प्रणालियों पर आधारित की, जिनमें आदर्शवाद, प्राकृतिकवाद, प्रग्मैटिज्म, और किसी मात्रा में अस्तित्ववाद और अतीतवाद के तत्व शामिल थे। उन्हें लगता था कि शिक्षा को व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिसमें उनकी मानसिक, भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक, और सामाजिक विकास शामिल है। यह लोगों को उनके आत्ममूल्य, स्वतंत्रता, नैतिकता, और चरित्र में वृद्धि करने में मदद करता है। उसके अनुसार, शिक्षा का मूल अर्थ है, ''जिसके द्वारा चरित्र बनता है, मानसिक ताकत बढ़ती है, बुद्धि का विवरण किया जाता है, और जिसके द्वारा कोई अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।'' उन्होंने कहा कि विद्या प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य, या ब्रह्मचर्य, आवश्यक है। उन्होंने एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम का वर्णन किया जो एक बच्चे केंद्रित शिक्षा का समर्थन करता है और बच्चों की आध्यात्मिक और भौतिक उत्तेजना को बढ़ावा देता है। उन्हें लगता है कि बुद्धि सभी ज्ञान का मूल है। व्यक्तियों के लिए सबसे अच्छी पुस्तकालय यही है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, सब कुछ लोगों के भीतर पर्दे के नीचे पहले से ही है और इसे उनके मन को मशीन बना देगी जानकारी के बड़े खंडों में बदलने के लिए पर्दे को उठाना होगा, जिसमें शिक्षक का काम आता है। व्यक्तियों केवल बाह्यिक वस्तुओं की मदद से ध्यान और ध्यान के माध्यम से अपने मन का अध्ययन कर सकते हैं। आदर्श विद्यालय विस्तारित स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता है, प्राकृतिक रूप से सुंदर वातावरण में होता है जिसमें प्राकृति साथ होती है, और छात्रों को आत्म–वास्तविकरण और चरित्र विकास में मदद करने के लिए ह्यूरिस्टिक तरीकों का उपयोग करता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया में मातृभाषा का उपयोग किया जाना चाहिए। वे राष्ट्रीय स्तर पर एक सामान्य भाषा के स्वीकरण की परिकल्पना करते हैं ताकि छात्रों को शिक्षित किया जा सके और भारतीय भावना को एकजुट किया जा सके। इसलिए, उन्होंने संस्कृत भाषा की महिमा को मान्यता दी और सभी को उसे एक सामान्य भाषा के रूप में उपयोग करने की प्रेरणा दी क्योंकि यह भारतीय भाषाओं की अधिकांशता की मातृभाषा है और प्राचीन भारतीय गर्व और सांस्कृतिक धरोहर की भंडार है। उन्होंने सभी के लिए शिक्षा, खासकर महिलाओं और समाज के सबसे वंचित सदस्यों की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया। उनका दृष्टिकोण यह था कि चरित्र विकास

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

और व्यक्तिगत संभावना की पहचान शिक्षा के माध्यम से होती है। इसलिए, महिलाओं की शिक्षा और सामान्य शिक्षा की समर्थन करना महत्वपूर्ण है ताकि एक शिक्षित समाज बना सके। उनका दृष्टिकोण था कि समाज के विकास में हर व्यक्ति का महत्वपूर्ण भूमिका रहता है, चाहे वो कितना भी कमजोर क्यों न दिखे। व्यक्तियों को उनके संवैचारिक और सृजनात्मक स्वरूप को विकसित करने और उन्हें समाज की सामूहिक और व्यक्तिगत वृद्धि और समृद्धि के लिए पूरी स्वतंत्रता देने की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद का यह मानना था कि हर मनुष्य जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने और हर परिस्थिति में अच्छाई को देखने की क्षमता रखता है। इसके लिए व्यक्तियों में नैतिक, नैतिक और आध्यात्मिक गुणों को पैदा करने के साधनों को प्रेरित करते थे।

## शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा में एक बहुविद्याविद, विवेकानंद ने व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण, प्रगतिशील विकास की प्रेरणा दी जो आत्मनिष्ठ दिव्य अज्ञात संवेदना और संभावनाओं के पूर्णता के माध्यम से होती है। इसे योग और ध्यान में लगकर अपने अहंकार को नष्ट करके, अभिमान और आत्म–केंद्रित विचार, अज्ञान और सभी प्रकार के फर्जी और भ्रांतिपूर्ण पहचानों को मिटाने के द्वारा किया जाता है। उनकी राय में, शिक्षा का उद्देश्य चरित्र, मानसिक दृढ़ता, बुद्धिमत्ता की विकास करना और अपने पैरों पर खड़ा होने की क्षमता विकसित करना चाहिए। उन्होंने मन (बुद्धिमत्ता), ह्रदय (नैतिकता और नैतिकता) और हाथ (कार्यक्षमताएँ) के विकास को एकत्रित और संतुलित करके एक बच्चे की सभी शक्तियों का विकास करने का उद्देश्य रखा। हालांकि, निम्नलिखित मुख्य शिक्षा के उद्देश्य हैं, जिन्हें स्वामी विवेकानंद ने प्रोत्साहित किया:

- **पूर्णता की प्रकटीकरण**

  उनके अनुसार, एक बच्चा भगवान की प्रकटीकरण है जिसमें प्रतिष्ठित ज्ञान की प्रकटि होती है (जैसे कि सामग्रिक और आध्यात्मिक ज्ञान)। इसलिए, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक छात्र या बच्चे को उनके आंतरिक आत्मा को समझने में मदद करना चाहिए, ताकि उन्हें उनकी छिपी हुई क्षमताओं और संभावनाओं की खोज करने में मदद मिल सके और पूर्णता को प्रकट कर सके। एक दिव्य व्यक्तित्व को बदलकर और अनचाहे सहज प्रवृत्तियों को संशोधित करके और अनुकूल प्रवृत्तियों को बनाए रखकर मानव व्यक्तित्व को सुधारा जा सकता है। मानव व्यक्तित्व को बेहतर बनाने के लिए, उन्होंने योग और ध्यान की सिफारिश की।

- **शारीरिक और बौद्धिक विकास**

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

स्वामी विवेकानंद ने एक बौद्धिक मन को पोषण करने और एक स्वस्थ शारीरिक शरीर को बनाए रखने के महत्व की जागरूकता को जताया। व्यक्तिगत और अशारीरिक संसाधनों का बुद्धिमत्ता से और तर्कसंगत रूप से उपयोग करने के लिए एक प्रगतिशील मन बनाना होता है। इसके अलावा, उन्होंने एक बच्चे के शारीरिक विकास पर ध्यान दिया। उनका मानना था कि स्वस्थ शरीर और मन मिलकर जाते हैं। वे इसे शारीरिक विकास की आवश्यकता के साथ साथ बौद्धिक विकास की आवश्यकता के लिए संतुलनित करने के रूप में स्थापित करते थे।

❖ **नैतिक और आध्यात्मिक विकास**

एक संतुलित व्यक्तित्व को विकसित करने में एक बच्चे की मदद के लिए, स्वामी विवेकानंद ने शारीरिक और बौद्धिक विकास के अलावा नैतिक और नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठान देने की मजबूत सिफारिश की। इससे बच्चे को अंतर्निहित मूल्य की और नैतिक आचरण की मजबूत भावना विकसित करने में मदद मिलती है। छात्रों के आध्यात्मिक विकास को स्कूल में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे सभी संस्कृतियों के बीच भाईचारे की भावना और विभिन्न दृष्टिकोण और पृष्ठभूमियों से आए व्यक्तियों के प्रति सहिष्णुता की मानसिकता बढ़ती है।

❖ **सामाजिक विकास**

स्वामी विवेकानंद ने बच्चे के संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करने में मदद करने के लिए नैतिक और नैतिक सिद्धांतों की स्थापना के लिए जोर दिया, साथ ही बच्चे के शारीरिक और बौद्धिक विकास को प्राथमिकता देने के लिए। इसका उद्देश्य था बच्चे में आत्मगुणों और नैतिक आचरण की मजबूत भावना को पैदा करने में मदद करना। छात्रों के आध्यात्मिक विकास को कक्षा में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि यह सभी संस्कृतियों के बीच भाईचारे की भावना और विभिन्न विचारों और अनुभवों वाले लोगों के प्रति सहिष्णुता की मानसिकता को बढ़ावा देता है।

❖ **विचारों का समावेश और पीढ़ी की उत्पत्ति**

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य लोगों को व्यक्ति, भगवान और प्रकृति के बारे में विचार और विचारों का समावेश करने में मदद करना चाहिए, साथ ही उन्हें अच्छे कर्मों के

लिए प्रेरित करना और आविष्कार को बढ़ावा देना चाहिए। इसे पके या तैयार तथ्यों को थोपने के लिए नहीं उपयोग किया जाना चाहिए।

- **आत्मनिर्भरता और आत्म–प्रभावकारिताः**

  स्वामी विवेकानन्द ने अपने द्वारा सिखाई जाने वाली आध्यात्मिक शिक्षा के अलावा शिक्षा के व्यावसायिक पहलुओं पर भी विशेष ध्यान दिया। छात्रों को स्वतंत्र बनने और अपने पैरों पर खड़े होने में मदद करने के लिए दर्शनशास्त्र, साहित्य और नैतिक शिक्षा के शिक्षण के अलावा कौशल–विकास विषयों के शिक्षण को प्राथमिकता दी जाती है। उन्होंने कहा कि परा–विद्या और अपरा विद्या दोनों विषयों को स्कूलों में पढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि वे विद्यार्थियों को सांसारिक गतिविधियों और आध्यात्मिक विकास के माध्यम से इस दुनिया और अगली दुनिया के लिए तैयार होने में मदद करते हैं। छात्रों को ऐसी शिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए जो उन्हें समाज में आर्थिक और रचनात्मक योगदान देने के लिए तैयार करे। सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य के लिए शिक्षा ('न्'ट्) का सुझाव बाद में 1977 में ईश्वरभाईपटेल आयोग के नाम से जाने जाने वाले भारतीय शैक्षिक आयोग द्वारा दिया गया, और विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त होनी शुरू हुई।

- **चरित्र निर्माणः**

  स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं के अनुसार, चरित्र विकास सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक लक्ष्यों में से एक है जिसे प्राप्त करने के लिए शिक्षक काम करते हैं। उनके अनुसार, ''किसी भी व्यक्ति का चरित्र केवल उसकी प्रवृत्तियों का योग है, उसके मन की प्रवृत्ति का योग है।'' यह लोगों की बौद्धिक भावनाओं, अवधारणाओं और कार्यों की अभिव्यक्ति है। उन्होंने चरित्र विकास के लिए संज्ञानात्मक गठन और उसके कार्य के महत्व को समझा। उन्होंने व्यक्तित्व विकास में व्यक्ति के स्वयं, अन्य लोगों जिनके साथ वे बातचीत करते हैं और जिस वातावरण में वे रहते हैं, के योगदान की भी पुष्टि की। किसी व्यक्ति का पालन–पोषण जिस वातावरण में होता है, उसका उसके व्यक्तित्व के विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि माहौल अनुकूल है, तो व्यक्ति की बौद्धिक अवधारणाएँ भी अनुकूल होंगी, और उनके उत्कृष्ट कार्य करने और अंततः अनुकूल व्यवहार प्रदर्शित करने की अधिक संभावना होगी।

## मनुष्य के निर्माण के लिए शिक्षाः

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

उन्होंने शिक्षा की कल्पना ऐसे लोगों के निर्माण की प्रक्रिया के रूप में की जो किसी व्यक्ति के अपने मूल्य, मूल्य, गरिमा, शक्तियों और अपने साथी मनुष्यों और जिस समुदाय में वे रहते हैं, उसके प्रति नैतिक दायित्वों के बारे में गहन जागरूकता को बढ़ावा देती है। यह न केवल लोगों को अपनी अंतर्निहित पूर्णता का एहसास करने में मदद करता है, जो समग्र विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि यह समाज को लगातार विकसित हो रही दुनिया में समृद्धि की ओर आगे बढ़ने में भी मदद करता है।

- **वैश्विक भाईचारा और सहिष्णुता विकासः**

  स्वामी विवेकानन्द मानवता की अनेकता में एकता के महत्व को समझते थे। उन्होंने व्यक्तियों को जीवन के सभी क्षेत्रों और सभी सामाजिक–सांस्कृतिक और नैतिक पृष्ठभूमि के लोगों के विचारों, राय और व्यक्तिगत अनुभवों से संपर्क करने, समझने, सम्मान करने और आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा का लक्ष्य छात्रों में वैश्विक भाईचारे की अटूट भावना और धर्म, क्षेत्र, संस्कृति, नैतिकता और नैतिकता में अंतर के प्रति सहिष्णुता पैदा करना होना चाहिए।

- **प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र का निर्माणः–**

  स्वामी विवेकानन्द के मुख्य शैक्षिक लक्ष्यों में से एक राष्ट्र–निर्माण है। लगातार बदलते वैश्विक परिवेश में राष्ट्र के मुद्दों और कठिनाइयों का समाधान करने में शिक्षा की शक्ति में उनका बहुत विश्वास था। इसलिए, शिक्षा सभी के लिए उपलब्ध होनी चाहिए ताकि बच्चे शैक्षणिक, शारीरिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से विकसित हो सकें। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''एक राष्ट्र जनता के बीच शिक्षा और बुद्धि के प्रसार के अनुपात में उन्नत होता है'' (ए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्चः 2277–7881य इम्पैक्ट फैक्टर –6.014य आईसी वैल्यूः 5.16य आईएसआई वैल्यूः 2.286 वॉल्यूम 8) , अंक 8(5), अगस्त 2019 ू.परउमत.पद 25 राष्ट्र और इसी कारण से, उन्होंने आम जनता तक शिक्षा की पहुंच पर जोर दिया। उन्होंने सही कहा कि ''अगर पहाड़ नहीं चढ़ता तो मोहम्मद को पहाड़ पर जाना ही चाहिए।'' उसके पास आओ।'' इसलिए, शिक्षा उन लोगों को उपलब्ध करायी जानी चाहिए जो इसे प्राप्त करने का प्रयास नहीं कर सकते।

## पाठ्यक्रम की प्रकृतिः

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रयासों के लिए परा–विद्या और अपरा–विद्या शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द ने जोर दिया था। उन्होंने नैतिक शिक्षा, वैज्ञानिक और उद्योग–संबंधी विषयों के अध्ययन और आत्म–बोध, चरित्र विकास और जीवन–निर्माण पर जोर दिया। जबकि अपरा–विद्या सांसारिक लक्ष्यों के लिए शिक्षा से जुड़ी है, परा–विद्या चरित्र निर्माण, जीवन निर्माण और आध्यात्मिक उत्थान में सहायता करने वाली आध्यात्मिक शिक्षा से संबंधित है। दुनिया भर में ख्याति प्राप्त व्यक्ति होने के नाते, उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा और सफलता और वित्तीय गतिविधियों से संबंधित विषयों दोनों की आवश्यकता को समझा। इसके अलावा, उन्होंने एक ऐसे पाठ्यक्रम पर जोर दिया जो शिक्षा की समावेशी प्रणाली के लिए उपयुक्त हो। ज्योतिष, भौतिकी, गणित, प्राणीशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र और आयुर्वेद जैसे अपरा–विद्या विषयों का निर्माण स्वदेशी लोगों के आध्यात्मिक उत्थान और भौतिक समृद्धि के लिए उचित रूप से किया जाना चाहिए। उनकी शिक्षा का उद्देश्य जन्मजात क्षमताओं और गुणों की अभिव्यक्ति के माध्यम से बच्चे के प्रगतिशील व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है।

## शिक्षित करने के तकनीकः –

स्वामी विवेकानंद की शैक्षिक दर्शनी उनकी आधुनिक शिक्षा प्रथाओं की गहराईयों की विश्लेषणात्मक विश्लेषण और प्राचीन भारतीय वेदांत दर्शन की व्याख्या का परिणाम है। उन्हें ऐसा मानना था कि वर्तमान शैक्षिक प्रणाली बच्चों पर अनावश्यक तनाव डालती है जिससे उन्हें बड़ी मात्रा में जानकारी का हिस्सा बनाने के लिए याद करना पड़ता है। वैदिक शिक्षा पद्धति प्रदान करती है एक समग्र और उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रक्रिया। एक छात्र की शिक्षा, वैदिक दर्शन के अनुसार, सुने गए शिक्षा से शुरू होती है, और विचारणा, ध्यान और समझ के साथ जारी रहती है ताकि बौद्धिक विकास और अपने जीवन में अर्थ की भावना को प्रोत्साहित किया जा सके। शिक्षकों को हालांकि, अपने पाठों को प्यार की भावना के साथ प्राप्त करना चाहिए। समाहित दर्शन के पक्षपाती के रूप में, उन्होंने शिक्षाविदों को उनके छात्रों से व्यक्तिगत स्तर पर संबंधित होने की अनुमति देने और प्रत्येक व्यक्ति की संभावना के विकास में मदद करने के शैक्षिक प्रथाओं का समर्थन किया। एक छात्र केंद्रित दृष्टिकोण का अद्वितीय तरीका है शिक्षा देने का सबसे अच्छा तरीका है। उनके प्रस्तावित शिक्षण विधियों में योग, ध्यान, प्रवचन पद्धति, चर्चा पद्धति, निर्माणात्मक विवाद, प्रेरणादायक या प्रश्नावली आधारित अध्ययन, स्व–अध्ययन, प्रश्न और उत्तर दृष्टिकोण, चित्रण आदि शामिल हैं।

## शिक्षण माध्यमः–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

विवेकानन्द का तर्क है कि शिक्षण मीडिया का चुनाव छात्रों की उनके शैक्षणिक लक्ष्यों तक पहुँचने में सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे आर.एन. टैगोर, स्वामी विवेकानन्द एक कट्टर राष्ट्रवादी थे जिनका मानना था कि स्कूल में विद्यार्थियों को उनकी अपनी भाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए। इसके अलावा, उन्होंने एक ही भाषा के उपयोग के माध्यम से राष्ट्रीय एकता बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने संस्कृत को भारत की आधिकारिक भाषा बनाने की वकालत की। उनके लिए, संस्कृत भाषा भारतीय गौरव, संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत और भारतीय लोकाचार की एक विस्तृत श्रृंखला की दार्शनिक समझ के एक महान भंडार का प्रतिनिधित्व करती थी क्योंकि यह अधिकांश भारतीय भाषाओं का स्रोत थी। प्राचीन भारत की धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराएँ सभी संस्कृत भाषा में खूबसूरती से समाहित हैं। दूसरी ओर, उन्होंने दुनिया भर में बोली जाने वाली भाषाओं को सीखकर अपने क्षितिज का विस्तार करने की वकालत की। पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी को समझने के लिए उन्होंने अंग्रेजी सीखने की आवश्यकता पर बल दिया।

## अनुशासन की विशेषताएँ:

जब लक्ष्य पूरा करने की बात आती है तो शिक्षा और अनुशासन को अलग नहीं किया जा सकता। वैदिक शिक्षा मॉडल में आत्म–अनुशासन के अभ्यास को अत्यधिक महत्व दिया गया है। यह आपके लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक प्रमुख कदम है। वैदिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को अपने गुरु के साथ गुरु के घर में रहना आवश्यक था, जहाँ वे सम्मान, आज्ञाकारिता और समर्पण के माहौल में डूबे रहते थे। गुरु का विद्यार्थियों पर पूरा अधिकार था, जब शिक्षक कहानियों, गणनाओं और ज्योतिष के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते थे, तो छात्र ध्यान से सुनते थे। स्वामी विवेकानन्द ने एक नया रुख विकसित किया और एक मुक्तिदायक प्रकार के आत्म–अनुशासन के लिए तर्क दिया जो आत्म–अनुशासन बनाए रखते हुए पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति देता है। उन्होंने कक्षा में एक सख्त आचार संहिता की वकालत की, जिसमें शिक्षकों से खुले दिल और उत्साह के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा करने की अपेक्षा की गई और छात्रों से सभी स्तरों (मानसिक, संज्ञानात्मक, बौद्धिक, व्यवहारिक, आध्यात्मिक और) पर आत्म–अनुशासित होने की अपेक्षा की गई। भौतिक)। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने किसी के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण की वकालत की। उन्होंने एक प्रकार के छात्र–केंद्रित अनुशासन की वकालत की जिसमें बच्चों को बाहरी स्थानों तक अप्रतिबंधित पहुंच की अनुमति दी गई ताकि वे आत्म–अनुशासन और भौतिक

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

दुनिया से दूरी बनाकर अपनी क्षमता का दोहन करना सीख सकें। शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों को उनकी अनूठी पहचान खोजने और अभिव्यक्त करने में सहायता करने तक सीमित है।

## बच्चों का स्थानः

यह वह बच्चा है जो विवेकानद के शैक्षणिक दृष्टिकोण के केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करता है। एक बच्चे की स्वायत्तता उससे शुरू होती है। एक बच्चा दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पुस्तक संग्रह है। विवेकानन्द का शैक्षणिक दृष्टिकोण इस सिद्धांत पर आधारित है कि सीखना खेल के संदर्भ में होना चाहिए। सीखने की प्रक्रिया के हर चरण में, लक्ष्य निर्धारित करने से लेकर कार्यक्रम डिजाइन करने से लेकर रणनीतियों के चयन और कार्यान्वयन तक, एक छात्र की आंतरिक क्षमताओं को ध्यान में रखा जाता है। बच्चा स्वस्थ व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने के लिए आत्मनिरीक्षण और आत्म–साक्षात्कार की दिशा में प्रयास करता है, जबकि शिक्षक और अन्य हितधारक शिक्षार्थी के रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए काम करते हैं।

## शिक्षा के प्रकारः–

- **व्यायाम शिक्षा :–**

  विवेकानन्द की शिक्षा की अवधारणा इसलिए भी दिलचस्प है क्योंकि यह बुद्धि और शरीर दोनों के स्वस्थ विकास पर ध्यान केंद्रित करती है। छात्रों को शारीरिक शिक्षा की समझ की आवश्यकता है और उन्हें अपने शरीर और दिमाग को मजबूत बनाने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए शारीरिक शिक्षा से गुजरना चाहिए, जो बदले में उन्हें चरित्र विकास, जीवन निर्माण और आत्म–प्राप्ति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है। शारीरिक स्वास्थ्य एवं तीव्र बुद्धि प्राप्त किये बिना शिक्षा के लक्ष्य को व्यवहार में साकार नहीं किया जा सकता। यदि आप भगवान के करीब रहना चाहते हैं, तो गीता पढ़ने के बजाय फुटबॉल खेलें, जैसा कि विवेकानंद ने शारीरिक शिक्षा के महत्व पर जोर देने की सलाह दी थी। आपके बाइसेप्स, आपकी मांसपेशियाँ, आपको गीता को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेंगी। जब आपके पैर मजबूती से खड़े होंगे और आप जानते होंगे कि आप एक आदमी हैं, केवल तभी आप उपनिषदों और आत्मा की पूरी सुंदरता की पूरी तरह से सराहना कर पाएंगे।

- **नैतिकता और धार्मिक प्रशिक्षणः**

  विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा को अपने केन्द्र में धर्म को शामिल करना चाहिए। बाकी सब करी है, और धर्म चावल है। सिर्फ चावल या सिर्फ करी खाने से बदहजमी हो जाती है। 15

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

सितंबर, 1893 को धर्म संसद में, उन्होंने दुनिया के धर्मों को अलग करने वाली बाधाओं को तोड़कर सार्वभौमिकता के प्रसार के लिए एक भावुक दलील दी। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए, उन्होंने एक मेंढक की कहानी सुनाई, जिसने अपना पूरा जीवन एक छोटे से कुएं में बिताया था, उसका जन्म और पालन–पोषण वहीं हुआ था और उसे विश्वास था कि दुनिया में इससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता। ''मैं एक हिंदू हूं'' कहते हुए उन्होंने अपनी कहानी समाप्त की। जब मैं यहाँ बैठा हूँ तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि पूरी दुनिया मेरा अपना निजी कुआँ है। ईसाई में पूरी दुनिया को अपने निजी आराम से देखने की प्रवृत्ति होती है। मुसलमान अपने छोटे से कुएं से दुनिया को देखकर संतुष्ट है। उन्होंने यह ज्ञान दिया कि कोई भी एक धर्म अन्य सभी से श्रेष्ठ नहीं है। धार्मिक विविधता के प्रति सबसे अच्छी प्रतिक्रिया अज्ञानता और शत्रुता नहीं है, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों द्वारा साझा की जाने वाली सार्वभौमिक सच्चाइयों की समझ है। वह बताते हैं कि धर्म प्रत्येक मनुष्य में अंतर्निहित दिव्यता का बाहरी संकेत है। हिंदू आस्था अपनी अनुकूलन क्षमता, दुनिया भर में स्वीकार्यता और दुनिया के कई धर्मों के प्रति सहिष्णुता के लिए प्रसिद्ध है, जो इसे दुनिया के सबसे विविध धार्मिक समुदायों में से एक बनाती है। आध्यात्मिक सुधार पर जोर देने के अलावा, यह ऐसे बुद्धिजीवियों या संतों को पैदा करने के लिए भी जाना जाता है जिन्होंने मानवता को परम आत्मा, ब्रह्मा के एक अनिवार्य हिस्से के रूप में देखा। उन्होंने आस्था को मन के अनुसंधान की एक शाखा के रूप में देखा। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''(भारत) जहां नैतिकता, कला, विज्ञान और साहित्य का सबसे पहला उद्‌गम स्थल था और जिसके बेटों की अखंडता और जिनकी बेटियों के गुण सभी यात्रियों द्वारा गाए गए हैं''

❖ **स्व–शिक्षाः–**

यह विवेकानन्द के शैक्षणिक दृष्टिकोण का एक अन्य प्राथमिक लक्ष्य भी है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अनन्त ज्ञान का भण्डार है। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर पहले से ही सारी जानकारी छिपी होती है। इसलिए, स्व–शिक्षा को एक ऐसे साधन के रूप में प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है जिसके माध्यम से लोग अपनी छिपी हुई क्षमता की खोज कर सकें और इसे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों तरह से प्रकाश में ला सकें। यह स्वयं की आत्मा की संपूर्ण समझ है जो व्यक्ति को अपनी अव्यक्त क्षमता को साकार करने में सक्षम बनाती है। स्वयं को जानना, स्वयं को समझना और स्वयं को अपनी पूरी क्षमता से विकसित करना, ये

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

सभी स्व–शिक्षा के लक्ष्य हैं। यह छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने और स्वयं का सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनने में सहायता करता है। इसके अलावा, यह छात्रों को उस सामाजिक संदर्भ में पढ़ना और अनुकूलन करना सिखाता है जिसमें वे खुद को पाते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा फायदेमंद है क्योंकि यह लोगों को अपने भीतर से जुड़ने की अनुमति देती है।

❖ **महिला शिक्षाः**

स्वामी विवेकानन्द ने देखा कि भारतीय महिलाएँ अपने परिवार के लिए सब कुछ त्याग देती हैं, यहाँ तक कि अपनी शिक्षा के लिए भी। स्वामी विवेकानन्द ने महिला शिक्षा के माध्यम से महिलाओं और पुरुषों की समान उन्नति की वकालत की। उन्होंने कहा, ''पुरुष और महिलाएं दो पहिये हैं जिन पर समाज चलता है।'' किसी की भी विफलता सामाजिक उन्नति के लिए घातक है। इसलिए, लड़कियों की शिक्षा में निवेश करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना लड़कों की। उनके मन में, महिलाएँ समाज की रीढ़ थीं और वह इंजन थीं जो खुशहाल जीवन की गाड़ी को चलाती थीं। हालाँकि, यह देखने में स्पष्ट था कि लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी गई थी। वह कई महिलाओं को यह समझाने में सफल रहे कि उनकी शिक्षा की कमी ने समग्र रूप से समाज को धीमा कर दिया है। उनका मानना था कि एक पक्षी की उड़ने की क्षमता उसके नर और मादा दोनों पंखों की ताकत पर निर्भर करती है। महिलाओं को अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना सामाजिक उन्नति के लक्ष्य को साकार करने के लिए आवश्यक है। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने की वकालत की ताकि वे समाज में आत्मविश्वास, आत्म–सम्मान और सम्मान हासिल कर सकें। पारंपरिक भारतीय गौरव और विरासत को तभी बहाल किया जा सकता है जब शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की स्थिति और स्थिति में सुधार किया जाए। शिक्षा में वर्तमान लिंग अंतर लिंगों की साक्षरता दर में परिलक्षित होता है, जो पुरुषों के लिए 82.14: और महिलाओं के लिए 65.46: है (जनगणना, 2011)।

❖ **समाज के कमजोर वर्ग के लिए प्रशिक्षणः**

भारत के सबसे अच्छे पुत्रों में से एक, स्वामी विवेकानन्द ने जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ी जो उस समय आम थी। उन्होंने साक्षरता और धार्मिक अवसरों तक पहुंच बढ़ाकर शूद्रों की आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए आधार तैयार किया। कभी–कभी उपनिषद केवल ऋषियों के लिए जंगल के एकांत में या किसी पहाड़ की चोटी

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

पर पढ़ने और अध्ययन करने के लिए बनाए गए हैं। यह आम लोगों की पहुंच से बाहर था. स्वामी विवेकानन्द अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई में अग्रणी थे, क्योंकि उन्होंने पूर्व में बहिष्कृत लोगों के लिए उपनिषदों का अध्ययन करने, भिक्षु बनने और ब्रह्मचर्य जीवन शैली बनाए रखने के अधिकारों की वकालत की थी। उन्होंने उपनिषदों की शिक्षाओं को आम जनता तक फैलाया। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए आश्रमों की स्थापना करके आम लोगों को धार्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान तक पहुंच प्रदान करने की भी वकालत की। जब स्वामी विवेकानन्द ने पारंपरिक हठधर्मिता को नष्ट कर दिया और वेद को जातिगत पदानुक्रमित व्यवस्था में उनकी स्थिति की परवाह किए बिना सभी आम लोगों के लिए उपलब्ध कराया, तो इसने हिंदू धर्म के विश्वासियों और अभ्यासकर्ताओं के बीच धार्मिक समानता और एकता का प्रदर्शन किया, इस तथ्य के बावजूद कि स्मृति, उनमें से एक थी। उपनिषदों के अविभाज्य भाग, शूद्र के आवासीय क्षेत्रों में वेद पाठ के निषेध के एक अनुच्छेद का समर्थन करते हैं। वंचितों के लिए शिक्षा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक कल्याण और आम लोगों में ईसाई भाईचारे की भावना पैदा करना उनकी शिक्षाओं के केंद्र में थे।

## पूर्व और पश्चिम को जोड़ने का एक प्रयास, स्वामी विवेकानन्द द्वाराः–

उन्हें भारत में पुरानी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, वैदिक दर्शन को पुनर्जीवित करने और पश्चिम में वेदांत दर्शन और योग लाने में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है। इसके अलावा, उन्होंने धार्मिक शिक्षा के व्यापक प्रसार की वकालत की। उन्होंने भारतीय छात्रों को पश्चिमी शिक्षा प्रदान करने का मूल्य देखा। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, इतिहास में पहली बार वेदांतिक विचार पश्चिमी संस्कृति में अनिवार्य हो गया। उन्होंने आध्यात्मिक उत्थान के लिए पुराने दर्शन को कुशलता से जोड़ा, जिसे ईस्टर संस्कृति द्वारा भौतिक आकांक्षाओं के लिए वर्तमान विज्ञान और प्रौद्योगिकी उन्मुख शिक्षा के साथ पूरक किया गया था। पहली बार, उन्होंने भारत के प्राचीन इतिहास को अस्पष्टता से बचाया, इसे दुनिया के सामने एक विशिष्ट और मूल्यवान पहचान के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें हर जगह लोगों को कठिनाई के समय में नेतृत्व करने की क्षमता थी। उन्होंने मजबूत राष्ट्रीय पहचान और गौरव के लिए भारतीय लोकाचार को बढ़ावा दिया, साथ ही व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, निष्पक्षता और महिला सशक्तिकरण जैसे पश्चिमी मानवतावादी विचारों को भी अपनाया। उन्होंने हिंदू धर्म और इसके जटिल समारोहों और परंपराओं के बारे में पश्चिमी लोगों की गलतफहमी को दूर करने का प्रयास किया और वे अपने साथ अमूल्य वैदिक साहित्य लाए। वह शांति

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

के धर्म को पृथ्वी पर सभी तक फैलाने में विश्वास रखते थे। वेदांत सिद्धांत से अवगत होकर, उन्होंने 1893 में विश्व धर्म संसद में भारत की शानदार सांस्कृतिक और बौद्धिक परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपना ऐतिहासिक उपदेश दिया। सभी लोगों को भाईचारे के एक सामान्य बंधन के तहत एकजुट करने और दुनिया भर में शांति फैलाने के लिए, उन्होंने एक वैश्विक धर्म का विचार प्रस्तावित किया। उन्होंने हिंदू धर्म के बारे में पश्चिमी लोगों के मिथकों को दूर किया और भारत के वास्तविक सांस्कृतिक अतीत और वैश्विक सभ्यता को आकार देने में नेतृत्व करने की क्षमता पर प्रकाश डाला। आध्यात्मिक चरित्र निर्माण और जीवन निर्माणकारी शिक्षा के प्रसार के अलावा, उन्होंने भौतिक खोज और भारतीय संस्कृति के लिए समकालीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी उन्मुख शिक्षा की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने वेदांतिक दर्शन और योग का ज्ञान पश्चिमी दुनिया में फैलाया।

## निष्कर्ष :–

वर्तमान शोध ने विवेकानन्द की दार्शनिक शिक्षाओं के साथ–साथ शिक्षा पर उनकी मान्यताओं और विचारों पर भी प्रकाश डाला है। यह निर्धारित किया गया था कि शिक्षा के कई पहलुओं पर उनके सिद्धांतों और राय का लाभकारी असर था और उन्हें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि उनकी विचारधारा ने समकालीन भारतीय शिक्षा के कुछ हिस्सों को आधार बनाया है। धार्मिक सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व जैसे विचार आज की दुनिया में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। हमारी समकालीन भारतीय संस्कृति में, शिक्षा की पश्चिमी भौतिक धारणा के साथ वेदांतिक आध्यात्मिक, नैतिक और नैतिक शिक्षा को एकीकृत करने का उनका प्रयास प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं के पूर्ण, प्रगतिशील विकास के लिए अधिक प्रासंगिक है। समावेशी शिक्षा की वर्तमान प्रणाली की नींव स्व–शिक्षा, मानव–निर्माण शिक्षा, चरित्र के लिए शिक्षा और राष्ट्र–निर्माण पर उनके विचारों में खोजी जा सकती है। इसके अलावा, उन्होंने महिलाओं और आर्थिक रूप से वंचितों के लिए शिक्षा पर अधिक जोर दिया, जो आज की दुनिया में अधिक नैतिक और आर्थिक रूप से प्रगतिशील समाज को बढ़ावा देने के साधन के रूप में सराहनीय और स्वीकार्य है। परिणामस्वरूप, कई तत्वों पर उनकी दार्शनिक शिक्षाएं और विचार सामने आए। शिक्षा उत्कृष्ट है, और परिणामस्वरूप, समकालीन शिक्षा समग्र रूप से समाज के लिए अधिक व्यावहारिक और उपयोगी बन गई है। शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षा का मूल सिद्धांत यह है कि एक सर्वांगीण पाठ्यक्रम छात्रों को उनके सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाकर आध्यात्मिक और शैक्षणिक रूप से बढ़ने में मदद करता है, जो कि उनके पास पहले से ही है लेकिन छिपा हुआ हो सकता है। अंत में, स्वामी विवेकानन्द के प्रभाव का मूल्यांकन करते हुए, नेताजी सुभाष चंद्र बोस

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

ने कहा, ''स्वामीजी ने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया।'' उनकी शिक्षाओं के परिणामस्वरूप हमारे लोगों ने अद्वितीय स्तर की गरिमा, स्वतंत्रता और आत्मविश्वास अर्जित किया है।

## संदर्भ

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

1. अरुलसामी, एस. (2011).दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य शिक्षा। नई दिल्लीः नीलकमल प्रकाशन प्रा.लि.
2. अविनाशीलिंगम, टी.एस. (1978)। शिक्षाः भाषणों से संकलित एवं स्वामी विवेकानन्द की रचनाएँ। मद्रासः श्री रामकृष्ण मठ। 15 वीं छोटा सा भूत
3. अरुलसामी, एस. (2011).शिक्षा पर दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। नई दिल्लीः नीलकमल प्रकाशन प्रा.लि.
4. अविनाशीलिंगम, टी.एस. (1978)। शिक्षाः स्वामी विवेकानन्द के भाषणों एवं लेखों से संकलित। मद्रासः श्री रामकृष्ण मठ। 15वाँ इम्प.एन.डी.
5. बनर्जी, ए.के. और मीता, एम. (2015)। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 4(3), 030–035।
6. जनगणना (2011).भारत में साक्षरता दर. 12ध्11ध्2017 को ू.बमदेने2011.बव.पद पर पुनः प्राप्त किया गया
7. 5. चंद्रा, एस.एस. और शर्मा, आर.के. (2004)। शिक्षा दर्शन। नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पी) लिमिटेड।
8. हुडा, एस.के. और सारिका।(2014)। आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक शिक्षा दर्शन पर स्वामी विवेकानन्द के विचार। अंग्रेजी भाषा, साहित्य और मानविकी का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, प्प्(2), 127–133।
9. जादल एम.एम. (2013)। आधुनिकीकरण लाने में स्वामी विवेकानन्द का योगदान। रिसर्च फ्रंट, 1(2), 27–30।
10. कापरी, यू.सी. (2017)। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा में योगदान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एंड इनोवेटिव आइडियाज इन एजुकेशन (प्श्र।त्प्प्),3(4), 1840–1845।
11. खेतान, बी. (2013)। शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचार। 22/10/2017 dks https%//www-LihfdaxVªh-bu/fct;–खैतान पर पुनः प्राप्त किया गया
12. कोठारी आयोग. (1964) शिक्षा पर कोठारी आयोग की रिपोर्ट, 1964–66।
13. कुमार, ए. (2015)। वर्तमान संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक प्रस्ताव। भारतीयम इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 4(पप), 1–7।
14. कुमार, एस. (2015): स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य और विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन के 15 बुनियादी सिद्धांत। 21ध्10ध्2017 को http%//www-publishyourarticles-net पर पुनः प्राप्त किया गया।
15. मंडल, डी. (2014).स्वामी विवेकानन्दः महान समाज सुधारक। क्वेस्टः मानविकी और सामाजिक विज्ञान के बहुविषयक जर्नल, 1(1), 1–8।
16. मंडेला, एन. (2014)। शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। कंप्यूटर, 8.
17. मंडल, ए. और मेटे, जे. (2012)। स्वामी विवेकानन्दः शिक्षा पर कुछ विचार। बहुविषयक शैक्षिक अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल,1(3), 79–85।

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

**18.** राष्ट्रीय ज्ञान आयोग.(2009). राष्ट्रीय ज्ञान आयोग. राष्ट्र को रिपोर्ट 2006–2009।

**19.** निथिया, पी. (2012)। शिक्षा के दर्शन पर स्वामी विवेकानन्द के विचार। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च, 1(6), 42–48।

**20.** पाणि, एस.पी. और पटनायक, एस.के. (2006)। शिक्षा पर विवेकानन्द अरबिंदो और गांधी। नई दिल्लीः अनमोल प्रकाशन प्रा. सीमित।

**21.** प्रतापन, एस. (2014)। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, शिक्षा की दार्शनिक नींवः अनुपालन। 10ध्11ध्2017 को ीजजचेःध्ध्ेनचतपं चतंजीांचंदमकन1ूवतकचतमे. बवउध्2014ध्06ध्25ध्ेूंउपअपअमांदकें–चीपसवेवचील–वि–मकनबंजपवद पर पुनः प्राप्त किया गया

**22.** रॉय, एस.डी. (2001)। स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में शिक्षा। 10ध्11ध्2017 को ीजजचःध्ध्ूूू. मेंउेातपज. बवउध्मध्ेचपतपजनंसपजलध्मकनबंजपवदध्मकनबंजपवद–प्द–जीमटपेपवद–वि–ैूंउप–टपअमांदकं–1.ेंचग पर पुनः प्राप्त किया गया

**23.** रुहेला, एस.पी. और नायक, आर.के. (2011)। शिक्षा की दार्शनिक और समाजशास्त्रीय नींव। आगराः अग्रवाल प्रकाशन.

**24.** सरकार, के. (2015)। शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के अनूठे विचार। प्रतिध्वनि द इकोयए पीयर–रिव्यूड इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, पअ(1), 94–98।

**25.** सरकार, आर. (2015)। स्वामी विवेकानन्द के विचार और शिक्षा दर्शनः राष्ट्र के अविनाशी विकास को बढ़ावा देने का एक मार्ग। विद्वानों का प्रभाव, 48–49.

**26.** सक्सेना, एन.आर.एस. (2006)। दार्शनिक और समाजशास्त्रीय शिक्षा फाउंडेशन, मेरठः आर लाल बुक डिपो।

**27.** सिद्दीकी, एम. एच. (2009)। शिक्षा में दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य.नई दिल्लीः ए.पी. एच. प्रकाशन निगम.

## Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide(if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontanes genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism /Guide Name /Educational Qualification /Designation/ Address of my university/college/institution/Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2022
Impact Factor: 11.9
Subject : Humanities

Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmissions there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal

**Sangeeta kumari**
**Dr. V. K. Sharma**

******